वेदों का श्रेय और प्रेय

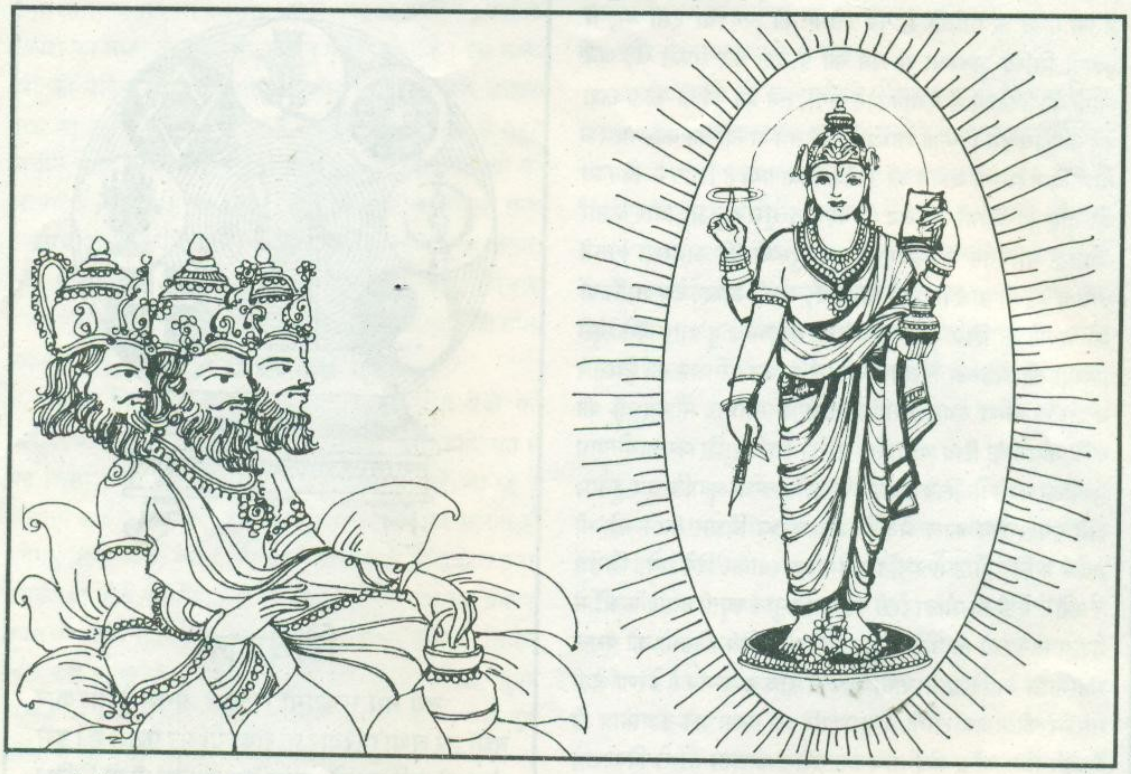

कहते हैं, आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। जब किसी वस्तु की आवश्यकता महसूस होती है तभी उस वस्तु विशेष का आविष्कार हो जाता है। यही प्राकृतिक नियम वेदों पर लागू हुआ। विधाता ने जब दुनिया बनाई तब कोई परेशानी नहीं थी। धीरे-धीरे मन्वन्तर पर मन्वन्तर बीतते गये। सारी प्रकृति का निर्माण हो चुका था। छटा मन्वन्तर आया तब विधाता ने अपनी सर्वश्रेष्ठ-कृति मनुष्य का निर्माण किया। उसमें आचरण के भ्रष्ट होने से अवनति तथा आचरण के शुद्ध होने से उन्नति के सारे गुण भर दिये। मनुष्य चाहे तो नीचे गिरे नीचता अपनाये चाहे देवता बने देवत्व अपनाये। मनुष्य चाहे तो परमात्मा में लीन हो जाये, जिसे मोक्ष कहते हैं। चाहे नरक में रहे, आवागमन के चक्कर में फंसा रहे। अब विधाता संतुष्ट था, परन्तु मनुष्य संतुष्ट नहीं हुआ। वह मनमानी करने लगा। आचरण से भ्रष्ट हुआ। उससे प्रत्याशा की गई थी कि वह ऊपर उठे, क्यों उसे जो बुद्धि मिली थी, उसका यही तकाजा था परन्तु उसे कौन समझाये ? क्या समझाये ? कब समझाये ? कैसे समझाये ? क्यों समझाये ? जब वह दिनोदिन पतनोन्मुखी होता गया तब परमपिता परमेश्वर को उसपर दया आई। देव संसद गठित हुई। विचार विमर्श हुआ। विधाता ब्रह्मा ने कहा-''मनुष्य को एक अवसर दो, उसे ऊँच-नीच, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, दण्ड-पुरस्कार, जन्म-मृत्यु तथा जैसी करनी वैसी भरनी का मर्म समझाओ। वह तब भी न माने तो उसे दण्डित करो। माने तो सुख दो, उन्नत्ति करे तो स्वर्ग दो, अवनति करे तो नरक दो। उसे उसी के आचरण से बांध दो। कर्म के सिद्धांत का निर्माण करके भाग्य अभाग्य से जकड़ दो। ''विधाता का यह सुझाव सबको पसंद आया। भगवान विष्णु ने कहा कि मैं एक आचारसंहिता बनाकर मनुष्य को प्रदान करता हूँ, जिसके अनुसार वह अपना जीवन व्यतीत करे। देवसभा की सहमति से भगवान विष्णु ने छटे मन्वन्तर में ही, जब पृथ्वी-माँ पापियों के भार से दबी जा रही थी. तब विधाता ब्रह्मा तथा विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के सानिध्य में, अवतरित होने का निश्चय किया।

भगवान विष्णु के लिए भगवान ब्रह्मा ने ग्यारह हजार वर्षों का तप किया। ब्रह्मा जी की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने, जोकि उनके चित्त में पहले से ही चित्र बने छिपे थे, प्रकट हो कर कहा-'' हे ब्रह्मदेव ! आंखे खोलो। मैं विष्णु तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हो कर प्रकट हुआ हूँ। मेरे चारो हाथों में कमल, दवात, स्याही और भोजपत्र हैं। मैं इनपर मनुष्यमात्र के लिए उपदेश लिखकर रख दूंगा। आप यही चाहते हैं न ?

ब्रह्मा जी बोले- ''हे नारायण। आप मेरे चित्त में चित्र बनकर गुप्त रहें, इसलिये आप ''चित्रगुप्त'' नाम से विख्यात होंगें और आप मेरी काया में स्थित होकर कायस्थ हुए, अतः आपका वर्ण ''कायस्थ'' नाम धारण करेगा। आप विद्या के धनी हैं अतः आप ब्राह्मण होंगें और कलम की ताकत धारण करने के कारण आप क्षत्रिय कहलायेंगे। आपके दो विवाह होंगें। पहला ब्राह्मणकुल और दूसारा छत्रियकुल में, इसप्रकार आप ज्ञान के स्थलरुप 'वेद' की रचना करके सीधे यमराज के दरबार की शोभा बढाकर न्यायाधीश का पद ग्रहण करके संसार को एक नया ज्ञान, नया साहित्य, नया विधान और नया जीवनदर्शन देंगे। आप का यह पहला अवतार 'चित्रगुप्तावतार' के नाम से प्रसिध्द होगा। आपकी सन्तति इस धराधाम पर कायस्थ नाम से ब्राह्मण-छत्रिय युग्म का चरितार्थ करेगी। आपकी जय हो।'

इस प्रकार ब्रह्माजी की आज्ञा शिरोधार्य करके भगवान चित्रगुप्त ने जो एक वेद लिखा, वह सभी के लिए न्याय मानक बना। यह वेद मनुष्य से आँकाक्षा करने लगा :-

१. **''मंत्र श्रुत्यं चरामहि''** (ऋ.१०/१३४/७) हम वेद मंत्रानुसार आचारण करें।

२. **'' सं श्रुतेन गभेमहि, मा श्रुतेन वि राधसि''** (अर्थवेद १/१/४) हम वेदानुसार चलें और कभी भी वेदों के विरोधी आचरण न करें।

३. **''मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्''** (ऋ.१०/५३/६) मननशील मनुष्य बनो और सन्तानों को दिव्य गुणों से युक्त करो।

४. **''तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु''** (यजु.३४/१) मेरा मन सदैव शुभ संकल्पों वाला हो।

५. **''उत्क्राम महते सौभगाय''** (यजु.११/२१) महान सौभाग्य के लिए उठो, प्रयत्न करो।

६. **''कुर्वेन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत समाः''** (यजु. ४०.२.) मनुष्य सुकर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे।

७. **''मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे''** (यजु. ३६.१८.) हम सब एक दूसरे को मित्र की तरह देखें।

८. **''मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्''** (ऋ. १०.१७३.१, यजु. १२.११., अर्थव. ६.८.७.) सावधान। तेरा राष्ट्र कभी भी अवनत न हो।

९. **'' शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त संकिर''** (अथर्व. ३, २४, ५०) हम सौ हाथों से धन-समृध्दि प्राप्त करें। साथ ही हजार हाथों वाले होकर उस धन को बाँटे।

अर्थात - **''पानी बाढे नाँव में, घर में बाढे दाम।**
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥''

१०. **''संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्''** (ऋ.१०.१९१.२.) हे मनुष्यों। तुम सब एक विचार के होकर साथ -साथ चलो, परस्पर प्रेम प्यार से आपस में बोलो तथा सबका मन समान होकर ज्ञान प्राप्त करो।

यह वेद ने इतना विपुल, विशाल और भीमकाय रुप धारण किया है कि मनुष्य मात्र की छोटी उम्र को ध्यान में रखते हुये, भगवान विष्णु ने पुनः बादरायण के रूप में अपना अवतार धारण करके इसके चार विभाग, इस प्रकार किये :-

१. ऋग्वेद ---- ज्ञान के लिये
२. यजुर्वेद ---- कर्म के लिये — त्रयीविद्या
३. सामवेद ---- भक्ति के लिये
४. अथर्ववेद ---- शेष सभी विज्ञानों के लिये

इस प्रकार एक वेद चार भागों में अर्थात व्यासों में करके बादरायण वेदव्यास कहलाये। यही वेद **''नास्ति वेदात्परम् शास्त्रं''** अर्थात वेद से बढकर कोई शास्त्र नहीं है'' - कहलाया। यही वेदों का वेदत्व है और यही है वेदों का श्रेय और प्रेय - जिनसे सारे शास्त्रों की उत्पत्ति हुई है।

बाद में भगवान ने स्वयं द्वापरांत में कृष्णावतार धारण करके गीता (गीतोपनिषद) रचा जो वेदों का सारांश है।

॥ वेद-रक्षार्थ-अवतार ॥

कुछ लोग कहते हैं कि भगवान विष्णु गौ, ब्राह्मण और पृथ्वी की रक्षा करने के लिए अवतार धारण करते हैं परन्तु यह सब झूठ है। भगवान वेदों की रक्षा करने के लिए अवतार धारण करते हैं।

भगवान विष्णु के दशावतार वेदरक्षार्थ हुये हैं, देखिये -

१. **मीनावतार** - मुख में वेद हैं, अतः वेदों की रक्षा के लिए।

२. **कूर्मावतार** - वेद में वर्णित कर्म के लिए, ताकि मिलकर कर्म करो।

३. **वराहावतार** - वेदों को पृथ्वी के साथ राक्षस से छुडाकर लाने के लिए ताकि पृथ्वी पर वेदधर्म कायम रहे।

४. **नृसिंह** - वेदानुसार आचरण करने वाले भक्त प्रहलाद की रक्षा करने के लिए।

५. **बामनावतार** - वेदों को मानने वाले देवों को न्याय दिलाने के लिए दैत्य बलि से छल द्वारा त्रिलोकी को छीनकर इन्द्र को देने के लिए।

६. **परशुराम** - वेदधर्म के शत्रु राजाओं और सहस्त्रवाहु का अंत करने के लिए।

७. **रामावतार** - वेदों को अपने चरित्र में चरितार्थ करने के लिए

८. **कृष्णावतार** - वेदों के विरुध्द राज्य करने वालों को मरवाकर वेदानुकूल धर्मराज स्थापित करने के लिए।

९. **बुध्दावतार** - वेदों के मर्म करुणा, दया, प्रेम को चरितार्थ करने के लिए और यह कहने के लिए कि दया और प्रेम इन्हीं दो शब्दों में वेद धर्म के सारे तत्व निहित हैं।

१०. **कल्कि अवतार** - वेदविरुध्द-आचरण करने वाले राजाओं को मारने के लिए।

भगवान ने वेद रचे हैं अतः भगवान कवि हैं। कहा भी गया है **''कविः कविनाम्''** (ऋग्वेद) अर्थात वह कवियों में श्रेष्ठ कवि हैं। अतः जो स्वयं कवि है वह अपनी कविता उपेक्षा भला कबतक सह सकता है ? वह तो अपनी कविता को चरितार्थ होते हुए देखना चाहता है। उसके अनुसार उसकी कविता का सार यह है -

''बडी कविता कि जो इस भूमि को सुन्दर बनाती है
बडा वह ज्ञान जिसको व्यर्थ की चिन्ता नहीं होती।
बडा वह आदमी जो जिन्दगीभर काम करता है
बडी वह रुह जो रोये बिना तन से निकलती है ।।''

उपरोक्त पद की चारों पंक्तियाँ चारो वेदों के सार प्रकट करती हैं। पहली पंक्ति यर्जुवेद को, दूसरी पंक्ति ऋग्वेद को तिसरी पंक्ति सामवेद को और चौथी पंक्ति अथर्ववेद को साकार करती है। जहाँ वेद हैं वहीं भगवान हैं। क्योंकि कविता में ही कवि का ह्रदय छिपा रहता है। भगवान कहते हैं कि मैंने ही सत्य-असत्य में भेद करके प्रजाओं के लिए देवी-वाणी (=वेदवाणी) को प्रकट किया है -

''अहं सत्यमनृतं यद् वदामि देवी परिवाचं विशश्च।''
(अथर्ववेद)

जबतक मनुष्य जीवित है तबतक वह संसार को भोगे और जब मरे तब स्वर्ग का आनन्द भोगकर मोक्ष प्राप्त करे। यही वेदों का वेदत्व है और इसी को मैं वेदों का श्रेय और प्रेय कहता हूँ। तो भी अन्य विचारकों के विचार जान लेना जरुरी है।

वेदों के विषय में विश्वविश्रुत-व्यक्तियों के विचार

वेदों के विषय में मैंने जो विचार व्यक्त किये हैं वे केवल मेरे अपने विचार ही नहीं है। वेदों के विषय में इसी प्रकार के विचार अन्य विचाराकों ने भी व्यक्त किये हैं। मैं यहाँ उनके विचारों की भी एक झलक दिखलाता हूँ,

देखिये-

''..... चारों वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं जैसे सूर्य चन्द्र पृथ्वी आदि। जैसे मनुष्य के शरीर से श्वाँस बाहर निकलती है, वैसे ही मानव सृष्टि के आदि में ऋग्यजुसाम-अथर्ववेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं। परम्परागत सभी आर्य यही सुनते व मानते आए हैं कि वेदों का आर्विभाव परमेश्वर द्वारा हुआ है। वेद ही समस्त ज्ञान,कर्म एवँ धर्म का आदि स्त्रोत हैं।

वेदों के बारे में मैक्समूलर तक यही कहता है कि ''हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वेद आर्यों की ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व की सबसे पुरानी पुस्तक है।'' अपनी पुस्तक ''रीजन एण्ड रिलीजन'' में वह कहता है कि ''यदि ईश्वर है, जिसने पृथ्वी और स्वर्ग बनाये हैं तो यह उसका अन्याय होगा कि वह भोजन से पहले उत्पन्न हुए लोगों को ईश्वरीय ज्ञान से वंचित कर दे। बुध्दि एवँ तुलनात्मक धर्म-अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ईश्वर अपना ज्ञान मानव सृष्टि के आदि में मनुष्यों को देता

है।'' यही बात बलपूर्वक जेकोलियट ने ''बाइबिल इन इण्डिया'' में कही है ''आश्चर्यजनक सत्य तो यह है कि हिन्दुओं का ईश्वरीय ज्ञान अन्य मताबलम्बी ईश्वरीय-ज्ञानों की अपेक्षा वर्तमान ज्ञान विज्ञान के ज्यादा अनुरुप है।'' इसी प्रकार एन.बी. पावगी लिखते हैं कि मूल ज्ञान के श्रोत ही नहीं बल्कि ईश्वरीय-ज्ञान और शाश्वत-सत्यों के भण्डार हैं।'' (वैदिक इण्डिया - मदर ऑफ पार्लियामैण्ट)। इस प्रकार भारतीय ही नहीं, विदेशी ईसाई तक वेदों को ज्ञान का आदिस्रोत मानते हैं।

--- ''वेद परिचायिका'' से

वेद या गीता में से ईश्वरकृत कौन है ?

यह तय करना कि वेद ईश्वरकृत हैं या गीता ईश्वरकृत है बडी टेढ़ी खीर है। वेद सृष्टी के आदि में ईश्वर ने लिखे थे और गीता वर्तमान चतुयुर्गी के द्वापर के अन्त में, वेदव्यासकृत 'महाभारत' का एक अंश मात्र है, जिसे भारतीय कानून प्रमाण के रूप में ईश्वरकृत मानकर प्रत्येक प्रतिवादी से गीता पर हाथ रखकर कसम खाने के बाद कि (मैं जो कुछ भी कहूँगा वह सच-सच कहूँगा और सच के अलावा कुछ भी नहीं कहूँगा।) अपनी साक्षी देने को कहता है। ..... सभी वेद, पुराण, उपनिषद, ब्राह्मण, आरण्यक, दर्शनशास्त्र, महाकाव्य तथा अन्य विदेशी विद्वान जब एक स्वर में यह कहते हैं कि वेद ईश्वरकृत हैं तब गीता पर हाथ रखकर कसम खाने से ज्यादा अच्छा होता कि कानून वेद के ऊपर हाथ रखकर हर प्रतिवादी को अपनी साक्षी व्यक्त करने से पहले यह कहलवाती कि '' मैं जो कुछ भी कहूँगा वह सब सच सच कहूँगा और सच के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कहूँगा।'' ज्यादा अच्छा होता।

गीता वेद की अपेक्षा जनता-जनार्दन में ज्यादा लोकप्रिय है मरने से पहले लोग वेद का नहीं, गीता का पाठ सुनते हैं, यह जनश्रुति बडी व्यापक है लोग तो यहाँ तक कहते हैं -

''गीता हृदय भगवान का, सब ज्ञान का शुभ-सार है।
इस शुध्द गीता ज्ञान से ही, चल रहा संसार है।।''

यह सच भी है। वेदों का दुरुह-ज्ञान गीता में आकर सस्वर गान बन गया है इसलिये वेदों के आगे गीता को प्रश्रय देना गलत नहीं है। तत्वतः गीता ही वेदों का श्रेय और प्रेय है। वेद अगर सूर्य हैं तो गीता चन्द्रमा है। जीवन के लिए तो दोनों ही जरुरी हैं।

***

लुप्त-विलुप्त वेदों का उध्दार किया था माँ दुर्गा ने ?

शिवपुराण की एक कथा के अनुसार प्राचीनकाल में एकबार दुर्गम नामक एक महत्वाकाँक्षी राक्षस ने अपनी कठिन तपस्या से ब्रह्मा जी को खुश करके उनसे यह वरदान पा लिया कि उसे कोई पुरुष नहीं मार सकता। अब उसने चारों वेदों को लुप्त करके सृष्टि के सम्पूर्ण-प्राणियों को कष्ट देना शुरू कर दिया। देवताओं को भी उसने न छोडा। चारो ओर हा-हाकार मच गया। तब देवताओं की प्रार्थना से द्रवित होकर आद्यशक्ति-माँ-भगवती ने दुर्गम राक्षस को मारकर ''दुर्गा'' नाम धारण किया।

माँ दुर्गा जगदम्बा ने दुर्गमासुर की समस्त आसुरि-सेना का डटकर सामना किया। उन्होंने एकसाथ काली, तारा छिन्नमस्ता, श्रीविद्या, भुनेश्वरी, भैरवी, बगुलामुखी, धूम्रा, मातंगी और कमला रुपी दस महाविद्याओं का रूप रखा। तभी महादुर्गा की महाशक्ति से दस दुर्गा, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिध्दिदात्री और आदि दुर्गा तथा असंख्य मात्टकाऐं प्रकट करके लुप्त-विलुप्त वेदों को उस असुर से छीनकर देवताओं को देकर लुप्त-विलुप्त वेदों का उध्दार किया।

हिन्दू जाति देवी-दुर्गा के इसी महान उपकार के प्रति नतमस्तक होकर आजतक उनकी पूजा-अर्चना करके अपने अस्तित्व को आश्वस्त किये हुऐ हैं। जबतक हिन्दू उनकी पूजा अर्चना करते रहेंगें तब तक देवी उनपर अपने वरदहस्तों की छाया करती रहेंगी।

रचयिता
मंजुलाचार्य
संपादक ''अध्यात्म अमृत''
१०७, पॉकिट-ई/१६, सैक्टर-८,
रोहिणी, नई दिल्ली-११००८५